अध्याय 10

विपत्तियाँ: टिड्डियाँ और अन्धकार

जैसे-जैसे कहानी अपनी चरम सीमा की ओर बढ़ती है, आठवीं विपत्ति (टिड्डियाँ) और नौवीं (अन्धकार) का वर्णन, अध्याय 10 में दिया गया है। दसवीं विपत्ति (पहलौठों की मृत्यु) अध्याय 11 से 13 तक का विषय है।

इस अध्याय में, परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया कि वह फ़िरौन के पास जाकर समझाए कि वह विपत्तियाँ इस्राएल को उसे जानना सिखाने के लिए भेज रहा है (10:1, 2)। मूसा और हारून फ़िरौन के सामने उपस्थित हुए और माँग की, कि इस्राएल को जाने की अनुमति दी जाए, और घोषणा की कि यदि फ़िरौन ने इनकार किया तो परमेश्वर टिड्डियों की विपत्ति भेजेगा। फिर वे फ़िरौन के सामने से चले गए (10:3-6)।

अपने कर्मचारियों के कहने पर, फ़िरौन ने मूसा और हारून को वापस बुलवाया और इस्राएलियों को जाने देने के लिए सहमत हुआ; परन्तु उसने पूछा कि कौन-कौन जाएगा (10:7, 8)। जब उन दोनों इस्राएली अगुवों ने बताया कि सभी जाएँगे - बच्चों और भेड़-बकरियों, गाय-बैलों समेत, तो फ़िरौन ने फिर से अपना मन बदल लिया और परमेश्वर के लोगों को जाने देने की अनुमति से इनकार किया (10:9-11)।

इसके बाद, परमेश्वर की आज्ञा पर, मूसा ने अपना हाथ बढ़ाया, और टिड्डियों की विनाशकारी विपत्ति का आरंभ हो गया (10:12-15)। इससे पहले मिस्र में इतनी टिड्डियाँ कभी नहीं हुईं थीं! फ़िरौन ने शीघ्रता से मूसा और हारून को बुलवाया। उसने अपने पाप को स्वीकार किया और विनती की कि वह विपत्ति हटाई जाए (10:16, 17)। मूसा ने प्रार्थना की, और टिड्डियाँ हट गईं; परन्तु फ़िरौन का मन कठोर हो गया, और उसने इस्राएल को जाने देने से इनकार किया (10:18-20)।

प्रत्यक्षतः मिस्रियों को कोई चेतावनी दिए बिना, परमेश्वर ने फिर नौवीं विपत्ति, सारे देश पर अन्धकार, भेज दी। एक घोर अन्धकार मिस्र पर तीन दिन तक बना रहा, परन्तु उसका इस्राएलियों पर कोई प्रभाव नहीं आया (10:21-23)। प्रत्युत्तर में फ़िरौन ने मूसा से कहा कि लोग जा सकते हैं, परन्तु उन्हें अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल को पीछे छोड़ना होगा (10:24)। मूसा ने बल दिया कि सब ही जाएंगे, पशु भी (10:25, 26)। फ़िरौन का मन फिर कठोर हो गया, और उसने

मूसा को कठोर शब्दों के साथ निकलवा दिया, जिसका मूसा ने उसी प्रकार से उत्तर भी दिया (10:27-29)।

टिड्डियाँ (10:1-20)

टिड्डियों के विषय चेतावनी (10:1-6)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जा; क्योंकि मैं ही ने उसके और उसके कर्मचारियों के मन को इसलिये कठोर कर दिया है, कि अपने चिह्न उनके बीच में दिखलाऊं। [2]और तुम लोग अपने बेटों और पोतों से इसका वर्णन करो कि यहोवा ने मिस्रियों को कैसे ठट्ठों में उड़ाया और अपने क्या क्या चिह्न उनके बीच प्रगट किए हैं; जिस से तुम यह जान लोगे कि मैं यहोवा हूं।" [3]तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जा कर कहा, "इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है: तू कब तक मेरे सामने दीन होने से संकोच करता रहेगा? मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें। [4]यदि तू मेरी प्रजा को जाने न दे तो सुन, कल मैं तेरे देश में टिड्डियां ले आऊंगा। [5]और वे धरती को ऐसा छा लेंगी, कि वह देख न पड़ेगी; और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है उसको वे चट कर जाएंगी, और तुम्हारे जितने वृक्ष मैदान में लगे हैं उन को भी वे चट कर जाएंगी, [6]और वे तेरे और तेरे सारे कर्मचारियों, यहाँ तक कि सारे मिस्रियों के घरों में भर जाएंगी; इतनी टिड्डियां तेरे बापदादों ने वा उनके पुरखाओं ने जब से पृथ्वी पर जन्मे तब से आज तक कभी न देखीं।" और वह मुड़ कर फ़िरौन के पास से बाहर चला गया।

आयत 1. आठवीं विपत्ति का आरंभ **यहोवा** द्वारा **मूसा** को **फ़िरौन** से जाकर बात करने के निर्देश के साथ हुआ। लेख यह विशेष रीति से नहीं कहता है कि मूसा को एक और विपत्ति के द्वारा फ़िरौन को धमकाना था। परन्तु वस्तुतः मूसा ने यही किया (10:4-6), इसलिए यह माना जा सकता है कि परमेश्वर ने उसे यही निर्देश दिए थे।

परमेश्वर ने संकेत किया कि उसने ही (फ़िरौन के) **मन को कठोर** किया, और उसके निकटतम परामर्शदाता **कर्मचारियों के मनों** को भी। यह परिच्छेद, 9:34 के साथ, संकेत करता है कि ढिठाई से यहोवा की बात न मानने में फ़िरौन अकेला नहीं था; उसके परामर्शदाता भी उसके दोष में भागी थे। पहले के समान, परमेश्वर द्वारा फ़िरौन के मन को कठोर किए जाने को राजा द्वारा विरोधी प्रवृत्तियों, जिन्हें उसने पहले प्रकट किया था, के अनुसार चलने के लिए परमेश्वर की अनुमति तथा प्रोत्साहन के रूप में देखा जाना चाहिए।

आयत 2. परमेश्वर ने अपनी योजना मूसा से कही। फ़िरौन के मन को कठोर कर के और आश्चर्यकर्म के चिह्न दिखाकर, परमेश्वर दो परिणाम प्राप्त करेगा। पहला, परमेश्वर के कार्य इस्राएलियों को कुछ स्मरण रखने के लिए प्रदान करेंगे -

छुटकारे की एक कहानी अपनी भावी पीढ़ियों को बताने के लिए (**अपने बेटों और पोतों से**)। इस्राएलियों के लिए यह स्मरण करना कि परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों के लिए क्या किया महत्वपूर्ण था जिससे वे कृतज्ञ हों और वाचा को त्याग न दें (12:26, 27; 13:8; व्यव. 4:9; 6:7; भजन 77:11-20; 78:4-6, 43-53; 105:26-38; 106:7-12; 135:8, 9; 136:10-15)। छुटकारे की यह कहानी उस संदर्भ में बताई जाएगी कि **यहोवा ने मिस्रियों को कैसे ठट्ठों में उड़ाया** और कैसे **अपने चिह्न उनके बीच प्रगट किए**। संभवतः यहाँ अर्थ है कि परमेश्वर ने उनके मध्य में अपने चिह्न दिखाकर मिस्रियों का ठट्ठा किया। मिस्री - उनके देवताओं, उनके राजा, और उनके बल के साथ - दस विपत्तियों द्वारा ठट्ठों में उड़ाए गए।

दूसरा, परमेश्वर के चिह्न इस्राएल के लोगों को यह ज्ञात करवाएंगे कि **मैं यहोवा हूं**। प्रकट है कि इस्राएली परमेश्वर के नाम को पहले से ही जानते थे और यह भी जानते थे कि यह आश्चर्यकर्म जो कर रहा है वह यहोवा है। परमेश्वर को "यहवह" के रूप में "जानना" का अर्थ उसके नाम को जानने भर से बढ़कर था। इसका अर्थ था कि उसके चरित्र, उसके व्यक्तित्व को जितना वे पहले से जानते थे उससे और अधिक जानना। इसलिए यह परिच्छेद 6:3 पर और प्रकाश डाल सकता है, जहाँ परमेश्वर ने कहा कि अपने नाम "यहवह" के द्वारा उसने अपने आप को पितरों पर प्रकट नहीं किया था। संभावना है कि अध्याय 6 का परिच्छेद का तात्पर्य है कि, यद्यपि वे उसका नाम जानते थे, वे उसे उतनी निकटता से नहीं जानते थे जितनी निकटता से उसके द्वारा छुड़ाए जाने के बाद जानने पाएंगे।

आयत 3. फिर से, **मूसा और हारून फ़िरौन** के सामने खड़े हुए, और फिर से मिस्र को विपत्ति के द्वारा धमकी दी यदि फ़िरौन **लोगों** को जाकर **यहोवा** की उपासना करने नहीं देगा। जैसा उन्होंने पहले भी संकेत दिया था वैसे ही अभी भी दिया कि फ़िरौन का मना करना घमण्ड होगा, जो दीन होने का विपरीत है। उसने अपने आप को **दीन करने से संकोच** किया था और यहोवा की आज्ञाओं की अनाज्ञाकारिता की थी। परमेश्वर के सामने दीन होना सदा ही उसकी इच्छा के प्रति आज्ञाकारी करता है।

आयत 4. जिस विपत्ति की धमकी परमेश्वर के सेवकों ने दी थी, निश्चय ही वह तब तक की सबसे बुरी विपत्ति थी। **टिड्डियाँ** अपने पीछे अकाल लाती थीं, क्योंकि टिड्डियाँ प्रत्येक जीवित पौधे को खा लेती थीं। भोजन के अभाव में मनुष्य और पशु दोनों नाश होते। इसलिए इसमें अचरज की कोई बात नहीं है कि जब फ़िरौन ने मूसा और हारून से उस विपत्ति को हटाने के लिए कहा, तो उसने कहा, "मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर कर" (10:17)। टिड्डियों की विपत्ति का अर्थ था मृत्यु - यदि तुरंत नहीं तो अन्तत।

आने वाली विपत्ति का वर्णन विस्तार से किया गया है। मूसा ने बताया कि वह कब होगी: "**कल**।" समय का यह सूचक विपत्तियों के समस्त वृतांत में दिखाई देता है, चाहे फ़िरौन द्वारा कहा गया, या यहोवा द्वारा, या मूसा द्वारा (8:10, 23, 29; 9:5, 18)।

आयत 5. इसके बाद मूसा ने बताया कि कितनी टिड्डियाँ होंगी: **वे धरती को**

छा लेंगी। शब्द "सतह" (עַיִן, *ऐयीन)* का वास्तविक अनुवाद "आँख" किया जा सकता है। "धरती की आँख" एक असामान्य अभिव्यक्ति है जो पवित्रशास्त्र में बहुत ही कम बार आई है (10:15; गिनती 22:5, 11)। यह धरती की दिखाई देने वाली *सतह* के लिए प्रयोग होती है।[1]

मूसा ने आगे वर्णन किया कि टिड्डियाँ मिस्रियों के जीवन को कैसे प्रभावित करेंगी: वे **ओलों** के बाद जो कुछ **बच** रहा है उसे **चट** कर जाएँगी। यह वर्णन सुझाता है कि पिछले ओलों के तूफ़ान से पौधों और पेड़ों के नाश के संदर्भ में "सब" और "सारी" (9:25) को अतिशयोक्ति के रूप में देखना चाहिए। लेख स्वयं प्रकट करता है कि अन्य फसलें नाश नहीं हुई थीं, अर्थात गेहूँ और कठिया गेहूँ (9:31, 32)।

आयत 6. इस्राएल के सताने वालों में से कोई भी विपत्तियों से बचेगा नहीं: टिड्डियाँ हर स्थान में छा जाएँगी, यहाँ तक कि **फ़िरौन** के घरों, उसके **कर्मचारियों** के, और **सभी मिस्रियों** के।

अन्त में मूसा ने विपत्ति की वीभत्सता की भविष्यवाणी की: वह मिस्र में हुए इससे पहले या बाद के किसी भी टिड्डियों की विपत्ति से कहीं बढ़कर होगा (देखें 9:18, 24)। यहाँ **तेरे बापदादाओं** और **तेरे पुरखाओं** का उल्लेख आयत 2 में "तेरे बेटों" और "तेरे पोतों" के समानान्तर है। आयत 2 में दिया गया वर्गीकरण इस्राएली वंशजों का है और आयत 6 का वर्गीकरण मिस्री वंशजों का है। ये पारिभाषिक शब्द इस खण्ड (10:1-6) के लिए आरंभ और अन्त के चिह्न हैं।

लेख "मूसा और हारून" कहने से हट कर **वह** के प्रयोग पर आता है, जो शायद मूसा के लिए आया है। मूसा विपत्ति की घोषणा करते ही, बिना प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा करे, प्रत्यक्षतः वह पलट कर चला गया।

फ़िरौन मूसा के साथ मोल-भाव करता है (10:7-11)

[7]तब फ़िरौन के कर्मचारी उस से कहने लगे, "वह जन कब तक हमारे लिये फन्दा बना रहेगा? उन मनुष्यों को जाने दे, कि वे अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करें; क्या तू अब तक नहीं जानता, कि सारा मिस्र नाश हो गया है?" [8]तब मूसा और हारून फ़िरौन के पास फिर बुलवाए गए, और उसने उन से कहा, "चले जाओ, अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो; परन्तु वे जो जाने वाले हैं, कौन - कौन हैं?" [9]मूसा ने कहा, "हम तो बेटों-बेटियों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों समेत वरन बच्चों से बूढ़ों तक सब के सब जाएंगे, क्योंकि हमें यहोवा के लिये पर्व करना है।" [10]उसने इस प्रकार उन से कहा, "यहोवा तुम्हारे संग रहे यदि मैं तुम्हें बच्चों समेत जाने देता हूं; देखो, तुम्हारे आगे को बुराई है। [11]नहीं, ऐसा नहीं होने पाएगा; तुम पुरुष ही जा कर यहोवा की उपासना करो, तुम यही तो चाहते थे।" और वे फ़िरौन के सम्मुख से निकाल दिए गए।

आयत 7. मूसा के चले जाने से **फ़िरौन के कर्मचारी** (परामर्शदाता) मन में संकट का आभास अनुभव करने लगे। उन्होंने तुरंत फ़िरौन से पूछा, **"वह जन कब**

तक हमारे लिये फन्दा बना रहेगा?" "कब तक ... ?" आयत 3 में मूसा के प्रश्न की प्रतिध्वनि है। एक "फंदा" (מוֹקֵשׁ, *मोकेश*) पक्षी या पशु के लिए लगाया गया जाल (आमोस 3:5; अय्यूब 40:24) है। फ़िरौन के कर्मचारियों ने मिस्र को मूसा द्वारा फंदे में फंसाए जाते देखा जिससे राष्ट्र का विनाश हो रहा था। यह कहना कि वह उनके लिए "फंदा" है का अर्थ है कि वह उनके लिए खतरनाक था। एक अनुवाद है, "वह हमारे लिए कब तक खतरा बना रहेगा?" (NAB), और एक अन्य है, "हम इस व्यक्ति के दांव में कब तक पड़ते रहेंगे?" (NJB)।

कर्मचारियों का कथन "**मिस्र नाश हो गया है**" प्रकट रूप से या तो अतिशयोक्ति है या प्रत्याशा है उस की जो मूसा के उनके देश पर विपत्तियाँ लाते रहने से होने वाला था: "सारा मिस्र नाश हो जाएगा।" मिस्र के विनाश में मूसा की सफलता की स्वीकृति परमेश्वर द्वारा मूसा में होकर किए गए "चिह्नों" की वास्तविकता तथा क्रूरता का अंगीकार है। फिर कर्मचारियों ने फ़िरौन से आग्रह किया कि **"उन मनुष्यों को जाने दे**।" पारिभाषिक शब्द "मनुष्यों" इब्रानी शब्द אִישׁ *(इश)* के बहुवचन रूप से अनुवाद किया गया है, जिसे "लोगों" (NIV) भी किया जा सकता है।

आयतें 8, 9. फ़िरौन ने अपने कर्मचारियों की सुनी और **मूसा और हारून** को बुलवाया। उसने इस्राएलियों के उस देश को छोड़ कर जाने की स्वीकृति दे दी, परन्तु पूछा कि **जाने वाले कौन-कौन हैं**? उसके प्रश्न का अभिप्राय था कि वह सब को जाने देने के लिए असहमत था। मूसा और हारून ने उत्तर दिया कि सब ही जाएँगे: **"हम तो बेटों-बेटियों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों समेत वरन बच्चों से बूढ़ों तक सब के सब जाएंगे**।" सभी इस्राएली जाएँगे, चाहे उनकी आयु या लिंग जो भी हो, और उनके पशु भी साथ जाएँगे।

आयत 10. फ़िरौन ने मूसा और हारून से कहा, **"यहोवा तुम्हारे संग रहे यदि मैं तुम्हें बच्चों समेत जाने देता हूं!"** उसके बोलने का ढंग व्यंगात्मक रहा होगा। संभवतः वह कह रहा था, "मैं तुम सब को कभी जाने नहीं दूँगा! यदि कभी तुम्हारा आग्रह स्वीकार होता है तो यह तुम्हारे परमेश्वर से होगा। कोई और तुम्हारी सहायता नहीं करेगा।" जॉन आई. डरहम ने सुझाव दिया कि फ़िरौन चतुराई से शब्दों के साथ खेल रहा था। क्योंकि शब्द "यहवह" उस शब्द के समान है जिसका अनुवाद "होना" होता है (3:14, 15 पर टिप्पणी देखिए), उसने फ़िरौन को कुछ इस प्रकार कहते हुए प्रस्तुत किया, "अवश्य ही यहवह तुम्हारे साथ *हो* जब मैं तुम्हारे इस निवेदन के लिए सहमत होऊँ!"[2]

फ़िरौन के मना करने का कारण स्पष्ट है। उसके संदेह मूसा के निवेदन के कारण जागृत हुए। यह माँगना कि सभी को जाने दिया जाए और इस्राएलियों को अपनी संपत्ति भी ले जाने दी जाए, इस बात का सूचक था कि वे पर्व मनाने के लिए तीन दिन की यात्रा से कुछ अधिक के लिए जा रहे थे (5:1, 3; 8:27)। वे हमेशा के लिए मिस्र छोड़ने का प्रयास कर रहे थे। यही वह **बुराई** ("बुरा उद्देश्य") थी जो उनके **आगे** था,[3] और वह ऐसा होने देना नहीं चाहता था।

आयत 11. तब फ़िरौन ने अपना अगला समझौता प्रस्तुत किया। उसका इससे पिछला समझौता, जो दो भागों में था, 8:25-29 में मिलता है: इस्राएली "इसी

देश में बलिदान" कर सकते थे, और फिर वे जा तो सकते थे परन्तु "बहुत दूर न जाना।" इस बार फ़िरौन ने कहा कि वह केवल **पुरुषों** (הַגְּבָרִים, *हग्गेबरिम)* को ही जाने देगा, परंतु स्त्रियों और बच्चों को नहीं। उसे और उसके समक्ष के अन्य लोगों के लिए यह एक यथोचित प्रस्ताव था, क्योंकि सामान्यतः धार्मिक पर्वों में केवल पुरुष ही उपासना में संलग्न होते थे (23:17; 34:23; व्यव. 16:16)। इसके अतिरिक्त, स्त्रियों और बच्चों को रख लेने से, फ़िरौन यह निश्चित कर लेता कि पुरुष लौट कर वापस आ जाएंगे। क्योंकि मूसा और हारून ने **फ़िरौन** की शर्तों को अस्वीकार कर दिया, इसलिए वे केवल फ़िरौन के सम्मुख से गए नहीं, वरन उसके **सम्मुख से निकाल दिए गए**।

टिड्डियाँ देश पर छा गईं (10:12-20)

[12]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मिस्र देश के ऊपर अपना हाथ बढ़ा, कि टिड्डियां मिस्र देश पर चढ़ के भूमि का जितना अन्न आदि ओलों से बचा है सब को चट कर जाएं।" [13]अतः मूसा ने अपनी लाठी को मिस्र देश के ऊपर बढ़ाया, तब यहोवा ने दिन भर और रात भर देश पर पुरवाई बहाई; और जब भोर हुआ तब उस पुरवाई में टिड्डियां आईं। [14]और टिड्डियों ने चढ़ के मिस्र देश के सारे स्थानों में बसेरा किया, उनका दल बहुत भारी था, वरन न तो उनसे पहले ऐसी टिड्डियां आई थी, और न उनके बाद ऐसी फिर आएंगी। [15]वे तो सारी धरती पर छा गई, यहां तक कि देश में अन्धकार छा गया; और उसका सारा अन्न आदि और वृक्षों के सब फल, अर्थात जो कुछ ओलों से बचा था, सब को उन्होंने चट कर लिया; यहां तक कि मिस्र देश भर में न तो किसी वृक्ष पर कुछ हरियाली रह गई और न खेत में अनाज रह गया। [16]तब फ़िरौन ने फुर्ती से मूसा और हारून को बुलवा के कहा, "मैं ने तो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का और तुम्हारा भी अपराध किया है। [17]इसलिये केवल अब की बार मेरा अपराध क्षमा करो, और अपने परमेश्वर यहोवा से बिनती करो, कि वह केवल मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर करे।" [18]तब मूसा ने फ़िरौन के पास से निकल कर यहोवा से बिनती की। [19]तब यहोवा ने बहुत प्रचण्ड पश्चिमी हवा बहाकर टिड्डियों को उड़ाकर लाल समुद्र में डाल दिया, और मिस्र के किसी स्थान में एक भी टिड्डी न रह गई। [20]तौभी यहोवा ने फ़िरौन के मन को कठोर कर दिया, जिस से उसने इस्राएलियों को जाने न दिया।

आयतें 12, 13. मूसा और हारून के फ़िरौन के सम्मुख से जाने के बाद, यहोवा ने **मूसा** को निर्देश दिया कि वह अपना **हाथ बढ़ाए**। यह करना प्रत्यक्ष प्रमाण होता कि विपत्ति उसके द्वारा परमेश्वर की ओर से आई थी (देखें 7:20; 9:22, 23; 10:21, 22)। जब मूसा ने आज्ञाकारी विश्वास के साथ कार्य किया, तो टिड्डियों की विपत्ति आरम्भ हो गई।

इस बात में अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए परमेश्वर ने एक प्राकृतिक प्रक्रिया का उपयोग किया: **टिड्डियों** और **पुरवाई** की विपत्ति। जैसा कि जे. फिलिप हेयाट

ने कहा, "पुरवाई सीनै और अरेबिया के रेगिस्तानी इलाकों से टिड्डियों को ले आती, जहाँ अनुकूल परिस्थितियों में रेगिस्तानी टिड्डियाँ पलती-बढ़ती थीं।"[4] किंतु, यह तथ्य कि यह परमेश्वर का कार्य था - एक अलौकिक घटना, एक आश्चर्यकर्म - इन बातों से प्रकट था: (1) इसकी भविष्यवाणी की गई थी (10:4-6); (2) यह आज्ञा देने पर हुआ, जब **मूसा ने अपनी लाठी को बढ़ाया**; और (3) यह मिस्र के इतिहास की सबसे बुरी टिड्डियों की विपत्ति थी (10:14)। फ़िरौन की प्रतिक्रिया ने प्रमाणित किया कि मिस्रियों ने विपत्ति को एक और प्राकृतिक आपदा से बढ़कर देखा (10:16)।

आयत 14. विपत्ति का विवरण टिड्डियों की संख्या पर बल देता है: **और टिड्डियों ने चढ़ के मिस्र देश के सारे स्थानों में बसेरा किया।** लेख यह भी कहता है कि **उनका दल बहुत भारी था**, वरन न तो उनसे पहले ऐसी टिड्डियां आई थीं (देखें 9:18, 24; 10:6), और न उनके पीछे ऐसी **फिर** आएंगी।

आयत 15. जैसी कि पहले भविष्यवाणी की गई थी (10:5), टिड्डियाँ **तो सारी धरती पर छा गईं**। यह तथ्य कि **यहां तक कि देश अन्धेरा हो गया** यह संकेत करता है कि इतनी अधिक टिड्डियाँ थीं कि जब उनका झुण्ड उड़ान भर रहा था तो उस देश पर उनकी बड़ी परछाईं आ गई। इस अन्धकार ने मिस्रियों द्वारा जिन सूर्य देवताओं की उपासना की जाती थी उनकी दुर्बलता का भंडाफोड़ कर दिया, विशेषकर उनके मुख्य इष्टदेव रे (या रा) का।

अंतिम केन्द्र बिंदु टिड्डियों के प्रभाव का है: निदान जो कुछ **ओलों से** बचा था, **सब को उन्होंने चट कर लिया** (देखिए 10:5 पर टिप्पणी)। योएल की पुस्तक में उस भारी विनाश का विस्तृत वर्णन है जो टिड्डियों के दल से हो सकता है। भविष्यद्वक्ता ने उनका वर्णन करते हुए उन्हें "घोड़ों के स्वरूप," "रथों के समान ध्वनि" करने वाला, और "सिंह के समान दांतों" वाला बताया। वे इतनी विनाशकारी होती हैं कि वे दाखलताओं को उजाड़ देती हैं और पेड़ों से उनकी छाल छील डालती हैं। वे एक हरियाले अदन की वाटिका जैसे स्थान को "उजाड़ मरुस्थल" बना देती हैं (योएल 1:4-12; 2:1-11)। जैसा कि ओलों की विपत्ति में हुआ था, टिड्डियों की विपत्ति की हानि ने मिस्री देवताओं की, जिनके लिए माना जाता था कि वे फसल को सुरक्षा और जीवन प्रदान करते हैं, निर्बलता को उजागर कर दिया।

आयत 16. इस विपत्ति से विश्वास कर के **फ़िरौन ने फुर्ती से मूसा और हारून को बुलवा** लिया। फिर से, जैसा उसने ओलों के समय किया था (9:27), फ़िरौन ने अपराध को स्वीकार कर लिया। इस बार उसने केवल अपने आप पर केन्द्रित किया, अपने लोगों का कोई उल्लेख नहीं किया। उसने **कहा, "मैं ने तो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का और तुम्हारा भी अपराध किया है"**; परन्तु उसने यहोवा को *अपना* परमेश्वर स्वीकार नहीं किया। प्रत्यक्षतः, उसने पहचाना कि यहोवा के पास उसे आज्ञा देने का अधिकार है और वह यहोवा की आज्ञा मानने के लिए बाध्य है। इसलिए, यहोवा का अवज्ञाकारी होकर उसने अपराध किया है।

फ़िरौन ने कहा कि उसने **"तुम्हारा भी"** अपराध किया है। उसके मन में मूसा

और हारून से किया गया दुर्व्यवहार रहा होगा। उदाहरण के लिए, उनकी पिछली भेंट में, उसने उन्हें अपने सम्मुख से निकलवा दिया था (10:11)। अधिक संभावना है कि वह इस्राएल के लोगों के विरुद्ध अपने अपराध के बारे में बात कर रहा था। क्योंकि वह, कम से कम कुछ समय के लिए, परमेश्वर की सार्वभौमिकता को स्वीकार कर रहा था, उसे यह भी स्वीकार करना पड़ा कि उसने परमेश्वर के लोगों को सता के उनके साथ दुर्व्यवहार किया है। परमेश्वर के लोगों का अपमान करना परमेश्वर का अपमान करना था।

क्या फ़िरौन का अंगीकार करना उसके पश्चाताप का संकेत है? यदि ऐसा है तो, वह क्षणिक था (देखें 10:20)। संभवतः, फ़िरौन पौलुस के उस कथन का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है कि "संसारी शोक मृत्यु उत्पन्न करता है।" संसारी शोक इस बात से आता है कि पापी पकड़ा और दण्डित किया गया है। उससे कोई आत्मिक पुरस्कार नहीं मिलता है, इसकी तुलना में "परमेश्वर-भक्ति का शोक," जो पश्चाताप (बदले हुए जीवन) की ओर ले जाता है उद्धार लाता है (2 कुरि. 7:9, 10)।

आयत 17. अपने अपराध का अंगीकार करने के बाद फ़िरौन ने मूसा से उसका अपराध **क्षमा** करने को कहा, और **यहोवा** से बिनती करने को**,** कि वह उस पर से **इस मृत्यु को दूर करे**। टिड्डियाँ, यदि वे देश पर विपत्ति के लिए बनी रहतीं, तो अपने पीछे अकाल और मृत्यु लातीं। वास्तव में, टिड्डियों के दृश्य, ध्वनि, और गंध ने मिस्रियों के मन में मृत्यु की छवियाँ बनाई होंगी।

आयतें 18, 19. फिर से लेख "मूसा और हारून" पर से केन्द्र को मूसा पर ले आता है (10:16); **मूसा ने फ़िरौन के पास से निकल कर यहोवा से बिनती की**। मूसा ने फ़िरौन का निवेदन स्वीकार किया। उसने यहोवा से विनती की, जिसके परिणामस्वरूप यहोवा ने टिड्डियों को उसी माध्यम से हटा दिया जिससे वह उन्हें मिस्र के विरुद्ध लेकर आया था - **प्रचण्ड पश्चिमी हवा बहाकर**। इस बार हवा **पश्चिमी** थी और उनको **उड़ाकर लाल समुद्र में डाल दिया**, जहाँ वे नाश हो गईं।

आयत 20. फ़िरौन ने जिस शीघ्रता से अपना धर्म पाया था उसी शीघ्रता से उसे खो भी दिया। जब उसने देखा कि विपत्ति हटा ली गई है, उसने अपना मन कठोर कर लिया (या **यहोवा ने फ़िरौन के मन को कठोर कर दिया**), और उसने मूसा के निवेदन को फिर से ठुकरा दिया।

अन्धकार (10:21-29)

[21]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि मिस्र देश के ऊपर अन्धकार छा जाए, ऐसा अन्धकार कि टटोला जा सके।" [22]तब मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया, और सारे मिस्र देश में तीन दिन तक घोर अन्धकार छाया रहा। [23]तीन दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा, और न कोई अपने स्थान से उठा; परन्तु सारे इस्राएलियों के घरों में उजियाला रहा। [24]तब फ़िरौन ने मूसा को बुलवाकर कहा, "तुम लोग जाओ, यहोवा की उपासना करो; अपने बालकों को भी संग ले जाओ; केवल अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल को

छोड़ जाओ।" [25]मूसा ने कहा, "तुझ को हमारे हाथ मेलबलि और होमबलि के पशु भी देने पड़ेंगे, जिन्हें हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये चढ़ाएं। [26]इसलिये हमारे पशु भी हमारे संग जाएंगे, उनका एक खुर तक न रह जाएगा, क्योंकि उन्हीं में से हम को अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना का सामान लेना होगा, और हम जब तक वहां न पहुंचें तब तक नहीं जानते कि क्या क्या ले कर यहोवा की उपासना करनी होगी।" [27]पर यहोवा ने फ़िरौन का मन हठीला कर दिया, जिससे उसने उन्हें जाने न दिया। [28]तब फ़िरौन ने उस से कहा, "मेरे सामने से चला जा; और सचेत रह; मुझे अपना मुख फिर न दिखाना; क्योंकि जिस दिन तू मुझे मुंह दिखलाए उसी दिन तू मारा जाएगा।" [29]मूसा ने कहा, "तू ने ठीक कहा है; मैं तेरे मुंह को फिर कभी न देखूंगा।"

आयतें 21-23. नौवीं विपत्ति के अन्धकार को, अधिकांश व्याख्याकर्ता, रेत की आँधी के कारण आया कहते हैं। यह तथ्य कि वह **ऐसा अन्धकार कि टटोला जा सके** था इस दृष्टिकोण की सहमति करता है, साथ ही अन्धकार का प्रभाव भी, कि **तीन दिन तक न कोई अपने स्थान से उठा**। सूर्य के प्रकाश के अभाव से आया अन्धकार लोगों को अपने घरों में नहीं रखता है, परन्तु रेत की भयानक आँधी रखेगी। रेत की आँधी या धूल की आँधी इतनी प्रचण्ड हो सकती थी कि उससे अन्धकार छा जाए और लोग देख न सकें।[5]

कोई आपत्ति कर सकता है कि, "यदि अन्धकार केवल रेत की आँधी ही था, तो उसकी पहचान परमेश्वर के कार्य, एक आश्चर्यकर्म, की कैसे हो सकती है?" वह तीन कारणों से परमेश्वर का कार्य माना जा सकता था: (1) आँधी का *समय* (वह तब आया जब **मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया**); (2) उसकी *तीव्रता* (वह ऐसा अन्धकार था "जिसे टटोला जा सकता था," **तीन दिन तक घोर अन्धकार छाया रहा**); (3) और उसका *चुनाव* (उससे **इस्राएलियों के घरों** में कोई प्रभाव नहीं पड़ा)। अन्धकार के लिए अन्य स्पष्टीकरण संभव हैं: वह "वायुमंडल में अत्यधिक भाप के बहने से भी हो सकता था,"[6] या फिर वह बस एक "अलौकिक अन्धकार हो सकता था ... जिसका कोई प्राकृतिक स्पष्टीकरण नहीं है।"[7]

इससे पिछली टिड्डियों की विपत्ति से भी अन्धकार हुआ था (10:15)। ये दोनों ही विपत्तियाँ मिस्र के सूर्य देवताओं का अपमान थीं, विशेषकर देवता रे (रा) का। यह तथ्य के इस्राएलियों के घरों में उजियाला था जबकि मिस्रियों के घर अन्धकार में थे, यहोवा की महान सामर्थ्य को प्रकट करता है। बाइबल में सभी स्थानों पर अन्धकार परमेश्वर के न्याय का सूचक रहा है (यशा. 8:22; योएल 2:1, 2; सप. 1:15; आमोस 5:20; मत्ती 8:12; 2 पतरस 2:17; यहूदा 13)।

आयत 24. फ़िरौन जानता था कि यह विपत्ति भी यहोवा ही से आई है, चाहे मूसा उसके सम्मुख उसकी घोषणा करने के लिए उपस्थित हुआ हो या नहीं। इसलिए, उसने **मूसा** को बुलावा भेजा और प्रस्ताव दिया कि लोग **जा** सकेंगे, प्रतिबन्ध केवल इतना था कि उन्हें **अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल** को पीछे छोड़ना होगा। संभव है कि राजा ने सोचा हो कि यदि इस्राएली अपनी संपत्ति

पीछे छोड़ेंगे, तो वे लौट कर अवश्य आएँगे। यह फ़िरौन का तीसरा प्रयास था मूसा को समझौता करने के लिए सहमत करने का (देखें 8:25-29; 10:8-11)।

आयतें 25, 26. मूसा भी दृढ़ था; सभी इस्राएली जाएँगे, और वे अपने साथ अपने सारे पशु और झुण्ड भी ले जाएँगे। उसने कहा, **"उनका एक खुर तक न रह जाएगा।"** उसने फ़िरौन से कहा कि, जब तक कि वे बीहड़ में न पहुँच जाएँ, वे नहीं जानेंगे कि कौन से **बलिदान यहोवा** के लिए चाहिए होंगे। इसलिए उन्हें अपने साथ अपने सारे **पशु** रखने होंगे।

आयतें 27-29. फिर से **यहोवा ने फ़िरौन का मन हठीला कर दिया**, और उसने इस्राएल को जाने देने से इनकार कर दिया। राजा ने क्रोध में मूसा से उसके सम्मुख से चले जाने की आज्ञा दी, और यह कहा कि यदि उसने मूसा को फिर देखा तो वह उसे मार डालेगा। **मूसा** ने उत्तर दिया कि **मैं तेरे** [फ़िरौन के] **मुंह को फिर कभी न देखूंगा**।

मूसा का कथन सत्य कैसे हो सकता है जब कि प्रत्यक्षतः उसने फ़िरौन के मुख को फिर से 12:31, 32 में देखा था? एक संभावना है कि फ़िरौन के शब्द उसकी खिसियाहट की चरम सीमा में कहे गए थे और बाद में उचित कारणों से उसने अपना मन बदल लिया। इसलिए, मूसा ने भी अपना मन बदल लिया। दोनों परिच्छेदों को समझने की एक और विधि है यह पहचानना कि दोनों पुरुषों ने क्रोधावेश में बोला था। आर. एलेन कोल ने कहा, "मूसा या फ़िरौन को उनके क्रोधावेश में कहे गए शब्दों के साथ बाँधना अनुचित होगा।"[8] एक तीसरी, किंतु कम संभावित संभावना है कि 12:31, 32, में दर्ज किए गए अवसर पर मूसा ने फ़िरौन का सामना व्यक्तिगत रीति से नहीं किया परन्तु उसे एक सन्देश भेजा।[9]

अनुप्रयोग

अपने बच्चों को बताना (10:2)

इस्राएल की ईश्वर-भक्ति, बहुत सीमा तक, घर पर आधारित थी। उनकी सन्तान अपने विश्वास में "घर में शिक्षित" होती थी। उनके छुड़ाए जाने को उनके बच्चों के सामने लंघन पर्व और अन्य अवसरों पर दोहराया जाना था (देखें व्यव. 6:6, 7)। क्या हमें अपने छुड़ाए जाने को अपने बच्चों के समक्ष दोहराना नहीं चाहिए? हम अपने घरों में अपने बच्चों को कितनी बार बताते हैं कि प्रभु ने हमारे लिए क्या कुछ किया है?

"कौन जा रहा है?" (10:9-11)

फ़िरौन के प्रश्न "कौन जा रहा है?" के लिए मूसा का उत्तर था "सभी!" (10:9-11)। हम भी, "वाचा के देश की ओर अग्रसर हैं।" हम अपने साथ किन्हें ले जाएँगे? सभी को! हमें सच्ची निष्ठा के साथ प्रयास करना चाहिए कि हर प्रकार के लोगों को चर्च में लेकर आएँ और उन्हें प्रोत्साहित करें कि वे कलीसिया में आनंदित तथा व्यस्त हों। हमें युवाओं को (हमारे बच्चे, हमारे बेटे और बेटियाँ), वृद्धों (हमारे

वरिष्ठ), पुरुषों, महिलाओं, या ऐसा कोई भी जिसे हम अपने साथ सिय्योन की यात्रा में ले सकते हैं छोड़ना नहीं चाहिए। सार्वजनिक शिक्षा के लिए एक नारा है "कोई बच्चा पीछे नहीं छूटेगा।" कलीसिया के लिए अच्छा आदर्श-वाक्य होगा, "कोई आत्मा पीछे नहीं छूटेगी।"

"एक खुर तक न रह जाएगा" (10:26)

यदि शैतान हमें मसीह के दावों को ठुकराने के लिए फुसलाने में सफल नहीं हो पाएगा, तो वह हमें प्रलोभन देगा कि हम यहोवा के साथ समझौता करें। विपत्तियों के वृतांत में तीन या चार बार, फ़िरौन ने प्रयास किया कि मूसा उसके साथ उस बात में समझौता करे जिसका परमेश्वर ने उसे करने का निर्देश दिया है। उसने कहा कि वह इस्राएल को जाने देगा यदि वे बहुत दूर न जाएँ, या यदि वे अपने परिवारों को पीछे छोड़ दें या अपनी संपत्ति को पीछे छोड़ दें।

"जाओ, परन्तु अधिक दूर नहीं।" डांस के झुण्डों की विपत्ति के बाद, फ़िरौन ने कहा, "तुम जा कर अपने परमेश्वर के लिये इसी देश में बलिदान करो" (8:25)। मूसा ने बलपूर्वक कहा कि इस्राएलियों को जंगल में तीन दिनों की यात्रा तक जाना होगा (8:27)। फ़िरौन ने प्रत्युत्तर दिया, "मैं तुम को जंगल में जाने दूंगा ... केवल बहुत दूर न जाना" (8:28)। परन्तु फ़िरौन ने अपना मन कठोर किया (8:32)। इसी प्रकार से शैतान आज कहता है, "कलीसिया का भाग बन जाओ, परन्तु संसार से बहुत दूर मत जाना; कलीसिया में बहुत अधिक संलग्न नहीं हो जाना।"

"जाओ, परन्तु अपने बच्चों को पीछे छोड़ दो।" ओलों के बाद, फ़िरौन लोगों को जाने देने के लिए सहमत हो गया (9:27, 28) परन्तु फिर से अपने मन को कठोर किया (9:34, 35)। अगली विपत्ति से पहले, वह लोगों को जाने देने के लिए सहमत हुआ, परन्तु उसने पूछा कि कौन-कौन जाएगा। मूसा ने उत्तर दिया, "हम तो बेटों-बेटियों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों समेत वरन बच्चों से बूढ़ों तक सब के सब जाएंगे, क्योंकि हमें यहोवा के लिये पर्व करना है" (10:9)। तब फ़िरौन ने उन्हें जाने देने से यह कहकर इनकार किया कि वह बच्चों को उनके माता-पिता के साथ कदापि जाने न देगा (10:10)। शैतान आज भी कहता है, "यदि तुम्हें मसीही होना है, तो हो जाओ, परन्तु अपने बच्चों को छोड़ दो। उन्हें मसीह का अनुयायी होने के लिए प्रभावित करने से तुम्हें कोई मतलब नहीं है।"

"जाओ, परन्तु अपनी संपत्ति को पीछे छोड़ दो।" इसके बाद अन्धकार की विपत्ति आई। फ़िरौन ने प्रत्युत्तर दिया, "तुम लोग जाओ, यहोवा की उपासना करो; अपने बालकों को भी संग ले जाओ; केवल अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल को छोड़ जाओ" (10:24)। मूसा ने उत्तर दिया कि इस्राएलियों को बलि के लिए पशु चाहिए और फिर कहा (10:25), "इसलिये हमारे पशु भी हमारे संग जाएंगे, *उनका एक खुर तक न रह जाएगा,* क्योंकि उन्हीं में से हम को अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना का सामान लेना होगा, और हम जब तक वहां न पहुंचें तब तक नहीं जानते कि क्या क्या ले कर यहोवा की उपासना करनी होगी" (10:26; ज़ोर दिया गया)। यहोवा ने फिर से फ़िरौन के मन को हठीला किया (10:27)।

यदि शैतान आपको परमेश्वर से दूर नहीं रखने पाएगा तो वह आपको मनाना चाहेगा कि आप अपनी संपत्ति को परमेश्वर के कार्यों में प्रयोग न करें।

शैतान द्वारा समझौता करवाने के इन सभी प्रलोभनों का सही प्रत्युत्तर है, "एक खुर तक न रह जाएगा।" कोई समझौता नहीं होगा! जिस प्रकार कि खिलाड़ी हार नहीं मानते हैं और महान योद्धा समर्पण नहीं करते हैं, उसी प्रकार महान मसीही भी कभी शत्रु के साथ समझौता या सौदा नहीं करते हैं।

उपसंहार। यदि हम हार न मान लें, तो अंततः विजय हमारी ही होगी। अन्त में, पहलौठों की मृत्यु के उपरान्त, फ़िरौन ने समर्पण कर दिया: "तुम इस्राएलियों समेत मेरी प्रजा के बीच से निकल जाओ; और अपने कहने के अनुसार जा कर यहोवा की उपासना करो। अपने कहने के अनुसार अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को साथ ले जाओ" (12:31, 32)। इसी प्रकार यदि हम बिना समझौता किए डटे रहें, तो हम शैतान पर विजयी हो सकते हैं।[10]

समाप्ति नोट्स

[1]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, और चार्ल्स ऐ. ब्रिग्स, *द ब्राउन-ड्राइवर-ब्रिग्स हीब्रू एण्ड इंगलिश लेक्सीकौन* (बोस्टन: हॉटन, मिफलिन एण्ड को., 1906; रीप्रिंट, पीबौडी, मैसाचुसेट्स: हेनड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1997), 744. [2]जौन आई. डरहम, *एक्सोडस*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 3 (वैको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 136. [3]एच. आई. एलिसन, *एक्सोडस*, द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलेडेल्फिया: वेस्टमिनिस्टर प्रैस, 1982), 57. [4]जे. फिलिप हेयाट, *एक्सोडस*, द न्यू सेंच्यूरी बाइबल कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1971), 124. [5]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कॉमेन्ट्री ऑन एक्सोडस, द सेकेंड बुक ऑफ मोसेस* (ऐबिलीन, टेक्सस: ऐसीयू प्रैस, 1985), 127-28. [6]एडम क्लार्क, *द होली बाइबल विद अ कॉमेन्ट्री एण्ड क्रिटिकल नोट्स*, वोल. 1, *जेनिसिस-ड्यूट्रौनमी* (सिनसिनैटी: हिचकॉक & वॉल्डेन, नौ डेट), 341. [7]रॉनल्ड ई. क्लेमेंट्स, *एक्सोडस*, द कैम्ब्रिज बाइबल कॉमेन्ट्री (कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1972), 63. [8]आर. एलेन कोल, *एक्सोडस: एन इनट्रोडक्शन एण्ड कॉमेन्ट्री*, टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1973), 101. [9]उपरोक्त। [10]प्रचार सन्देश के ये विचार क्लाउड गिल्ड से है, जिन्होंने ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया में 1970 के दशक में मिशनरी सेवा की।